

— अति *caus. in grosser Menge Jmd (acc.) Etwas (acc.) zu trinken* geben: सा मद्यं तेनातिपायिता *ΚΑΤΗΛ. 39,207.*

— अनु *nachher —, darauf trinken:* एताभिर्वा इन्द्रस्तृतीयसवनमन्व-
पिबत् *AIT. Br. 3, 38. ÇĀṆKH. Çh. 4, 21, 15. Suçr. 4, 167, 16. कल्माषान्म-
न्वयेन्मधु चानुपिबत् 377, 4. 2, 160, 6. नीलान्यवान्गव्यपयोऽनुपीतान् 325,
19. धात्रीफलानां स्वरमेन चूर्णम् — लीढानुपीत्वा च पयः VARĀH. BRH. S.
75, 6, 8. मधु पीत्वा रसवत्कथं नु मे । अनुपास्यसि वाष्पद्वयितं परलेकि-
पनतं जलाञ्जलिम् *später trinken RAGH. 8, 67. trinken an:* मृगयूथानुपी-
तानि (°निपीतानि *SCHL.*) — तीर्थानि *R. GORR. 2, 104, 5. Vgl. अनुपान.* —
caus. nachher trinken lassen: यथा परिविष्यानुपाययेत् *ÇAT. Br. 9, 2, 8, 41.**

— अत्तरु *s. अत्तःपेय.*

— अति *davon trinken:* भूय द्वाभिरपय शेषं ब्राह्मणाय दद्यात् *GOBR. 4,
10, 14. अभिपीतं getränkt, erfüllt von:* न तुत्पिपासे रात्रेन्द्र भूमेऽशुक्ले भ-
विष्यतः । वसोर्धाराभिपीतत्वात्तेजसाप्यापितेन च ॥ *MBh. 12, 12844.*

— अत्र *s. अत्रपान.*

— अन्व *nach Andern zum Trunke kommen:* तत ईश्वरा यदि नामु-
रत्तास्यन्ववपातोः *ÇĀṆKH. Br. 10, 2, 17, 9.*

— आ *trinken aus:* प्रशास्त्रादा पिबतं मधु *RV. 2, 36, 6. पात्तमा वा अ-
न्धसः 8, 81, 1. austrinken:* समुद्रम् *R. 3, 55, 9. hineintrinken, einschlü-
rfen, trinken an:* (अस्य) नापिबेयं बलाहते भिन्ना चेदुधिरं युधि *MBh. 2,
2802. मादनीयानि पानानि 7, 2812. आस्रुत्याकाशगङ्गायामापीय सलिलं
बहुः HARIV. 10432. घडाननापीतपयोधरासु — कृत्तिकासु RAGH. 14, 22. त-
ता ऽस्या आप्यैा वक्रं पर्वं मधुकोरो यथा HARIV. 8746. उपैति सविता न्य-
स्तं रसमापीय पार्थिवम् *einsaugen, aussaugen MBh. 12, 2119. दिवाकारा-
पीतरसा मैहायधीः 1894. mit den Ohren Etwas einsaugen, hören:* भग-
वत्क्यामुधाम् । आपीय कर्णाञ्जलिभिः *Bhāg. P. 3, 13, 49. आपीयताम् man
höre 2, 6, 45. mit den Augen einsaugen:* ता राधवं दृष्टिभिरापिबन्त्यो नार्यः
RAGH. 7, 12. Vgl. आपान, आपायिन्. — *caus. einschlürfen lassen:* आपा-
ययति गोविन्दपादपद्मसर्वं मधु *Bhāg. P. 4, 18, 12.**

— समा *einsaugen, aussaugen:* समापिबन्तो जगतां मतानि जलानि भूमे-
रिव सूर्यपादाः *ÇĀṆKH. NITIS. 12, 48. अतीक्ष्णोऽभ्युपायेन तथा राष्ट्रं समापिबेत्
MBh. 12, 3307.*

— उद् *med. austrinken, aufzehren, sich voll trinken:* उत्पिबन्ते वा
श्मानि दिनु नाष्ट्रा रत्तोसि *ÇAT. Br. 5, 2, 4, 7, 11. — Vgl. उत्पिब.*

— अनुद् *nach einem Andern austrinken ÇAT. Br. 3, 7, 4, 39. fgg.*

— नि *hineintrinken, einschlürfen, trinken an:* गलात्सर्वमसगस-
वम् — निपीय *Bhāg. P. 5, 9, 19. तृष्णार्तिश्च निपीयते वनमृगैरुन्नं पयः सार-
सम् MĀKĀH. 116, 11. निपीततोषा (न्दो) गजसिंक्वानरैः R. 2, 95, 18 (104,
19 GORR.). दत्तच्छर्दं प्रियतमेन निपीतसारम् R. 4, 13. PRAB. 60, 5. Spr.
597. तदमन्दरसस्यन्दसुन्दरेयं निपीयताम् । श्रोत्रप्रुक्तिपुटेः स्पष्टा साङ्ग-
ज्ञतरंगिणी ॥ *RĀGĀ-TAR. 1, 24. (ताम्) निपीयमानलावण्यां लोलैर्देवासुरेक्षणीः
KĀTĪH. 50, 182. मृगयूथनिपीतानि (°अनुपीतानि GORR.) तीर्थानि R. 2, 95,
5. अत्र एव निपीयते ऽधरः BHART. 1, 82. मधुपेनिपीतकुमुदः (तरुः) Spr.
922. einsaugen, absorbieren, verschwinden machen:* न्यपाद्वायुं सकाम्भ-
सा *Bhāg. P. 3, 10, 6. स्वप्नमदृतेव निपीतेभेदमोक्षाय (पराय) 9, 14. Vgl.
निपान, निपीति. — caus. einschlürfen lassen Bhāg. P. 8, 2, 25.**

— निन् *aus Etwas trinken, austrinken:* क्षिण्यन्ति निष्पिबन्ति *TS.
2, 3, 81, 5. दूर्तिनिष्पीतः ÇAT. Br. 1, 6, 8, 16. (वदनम्) निष्पीतं चार्कश्मि-*

IV. Theil.

भिः *ausgesogen R. GORR. 2, 62, 17, v. 1. — Vgl. निष्पान.*

— परि *vor und nach Jmd trinken:* तान्वै त्वमुभयतः परिपिब *AIT.
Br. 3, 30. austrinken, aussaugen:* मत्तद्विपरिपीतमधुप्रसेक (कोविदार)
*R. 3, 6. वाट्वर्कपरिपीताम्बु (तडाग) R. 4, 15, 84. परिपीतं getränkt mit
Suçr. 4, 60, 5. तैल° 2, 35, 14. 72, 14. — Vgl. परिपान.*

— प्र *sich an's Trinken machen, trinken:* सजोषतो ये च मन्सानाः प्र
वायवः पात्त्ययंपीतिम् *RV. 2, 11, 14. यज्ञा देव प्रपिबन्ति 10, 85, 5. येन प-
था प्रपिबन्ते सुतस्य 10, 114, 7. ततः पिबत्सु तत्कालं देवेष्वमृतमोप्सितम् ।
राहुर्विबुधद्वेषण दानवः प्रापिबत्तदा ॥ MBh. 1, 1161. 13, 3711. कण्ठमा-
च्छिष्य — प्राप्यामि फेनिलं रुधिरं बहु 1, 5936. 3, 14615. 14, 247. HA-
RIV. 18701. R. 3, 35, 57. भुञ्जानः प्रपिबन्वाद् *Bhāg. P. 6, 1, 26. 7, 4, 38.
ऋतुः पश्यति यः सर्वं चतुषां प्रपिबन्निव sich mit den Augen labend an
MBh. 5, 1116. R. 2, 45, 5. Bhāg. P. 4, 9, 3. प्रपाय absol. P. 6, 4, 69, Sch.
VOP. 26, 212.**

— अनुप्र *nach der Reihe Etwas trinken, act. AIT. Br. 2, 37, 3, 22.
med. nach Jmd (acc.) trinken:* देवान्वै पितृन्मनुष्याः पितरोऽनुप्रपिबन्ते
*KAṬH. 36, 13. तस्मात्प्रस्तादूर्वाञ्चै मनुष्यान्पितरोऽनुप्रपिबन्ते (!) TS.
2, 5, 8, 7. Vgl. TBA. 1, 3, 20, 4.*

— वि *einzelnen, zu verschiedenen Malen oder Zeiten trinken:* वि
पिबन् कुशिकाः सोम्यं मधुं *RV. 3, 53, 10. यत्सुरामं व्यपिबः शर्वाभिः 10,
131, 5. 4. उभे वा एष एते सवने विपिबन्ति यत्सविता AIT. Br. 3, 29. अद्यः
क्षीरं व्यपिबत् VS. 19, 73. — Vgl. गर्दभीविपीत.*

— सम् *act. zusammen hineintrinken AV. 5, 135, 2. med. zusammen
trinken:* सं यज्ञेषु पिबन्धम् *RV. 7, 37, 2. समृतभिः पिबन्त्सु 4, 35, 7. 9. 10,
135, 1. AIT. Br. 3, 30. ÇAT. Br. 3, 6, 2, 26. ÇĀṆKH. GRH. 1, 17. Vgl. संपि-
ब, संपीति. — caus. trinken lassen:* रेतः संपाययति *Bhāg. P. 5, 26, 26.*

2. पा (= 1. पा) *adj. (पा [sic] पातरि MED. p. 1) am Ende eines comp.
trinkend:* अमृत° *MBh. 12, 10435. विषाग्निं, मृत्युं, क्षीरं, मधुश्च्युता-
नामधपाः, तुषिताद्य° 10436. Vgl. अग्नें, इन्द्रपातम् (mit passiver Bed.),
अन्नस्या, ऋतुं, ऋद्, कीलालं, पयस्या, पूर्वं, मधुं, सोमं u. s. w. und
auch 1. प.*

3. पा, पाति *DRĪTUP. 24, 48. पीपाय, पासति und (परि) पासत्सु ved.;
sor. अपासीत्; prec. पायात् P. 6, 4, 68, Sch. 1) bewachen, bewahren,
schützen, schirmen, hüten vor (abl.): मासञ्च पाथः शरदंश्च पूर्वाः RV. 7,
91, 2. पातं नः पायुभिः 5, 70, 3. तद्दार्प्यं यत्पाति (देवाः) 8, 25, 13. 1, 180, 7.
VS. 4, 9, 11. AV. 6, 3, 1. fgg. यं पाथना शंसात् RV. 1, 166, 8 41, 2. निद्-
स्पातु (vgl. P. 8, 3, 52) 6, 61, 11. दिव स्वम्भः समृतः पाति नाकम् 4, 13, 5.
ÇAT. Br. 1, 5, 4, 22. ते यज्ञं पातु रजसः TBA. 3, 1, 3, 8 in Z. f. d. K. d. M. 7,
272. — तांस्त्वं पासि MBh. 2, 2607. 14, 514. न्यमपथगं पासि *RĀGĀ-TAR.
4, 321. GHAT. 12. नाव्यारोप्य महीमथ्यामपद्विस्वतं मनुम् Bhāg. P. 4, 3,
15. पातौ partic. BHATT. 6, 96. पाति MBh. 1, 1258. R. 2, 79, 5. पातु, पातु
DRĪTAS. 66, 6. MBh. 3, 1331. R. 2, 25, 12. VARĀH. BĀH. S. 47, 79. 61, 2.
VOP. 25, 24. स पायाद्वा गजाननः KĀTĪH. 27, 4. Bhāg. P. 6, 8, 12. पातुम्
R. 1, 21, 8. RAGH. 10, 26. अथर्मात्पाति माम् MBh. 1, 3417. भयेभ्यः 9, 2733.
सर्वतः R. 2, 107, 12. उपल्लवेभ्यः RAGH. 2, 48. Bhāg. P. 6, 8, 18. पात्येतो
संप्रतं पुरीम् R. GORR. 1, 48, 19. पातु पृथ्वीम् — भूपाः MĀKĀH. 178, 12.
द्वापञ्चाशतमब्दान्दमो दौ च मासा तदात्मजः । अपासीत् so v. a. regierte
*RĀGĀ-TAR. 1, 339. 3, 379. 475. स यामाद्यैः सुरगणैरपात्स्वायंभुवात्तरम् Bhāg.***